मध्यकालीन संगीत की स्थिति : मुगल शासकों के संदर्भ में

सुरभी घुले
शोधार्थी (संगीत)
वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली (राज.)

डॉ.संतोष कुमार पाठक
एसोसिएट प्रोफेसर,
संगीत विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली (राज.)

ऐतिहासिक अध्ययन से विदित होता है कि जहाँ यवन संस्कृति के आगमन ने भारतीय सांस्कृतिक विरासत को झकझोर दिया था एवं नष्ट भ्रष्ट किया था, वहीं उत्तरोत्तर मुस्लिम शासकों ने इस विरासत को सजाया संवारा भी। कलाकारों एवं विद्वानों ने राज्याश्रय प्राप्त कर संगीत के क्षेत्र में पुरातन तत्वों से युक्त नवीन अविष्कार किये जिससे संगीत निरन्तर उन्नत होता गया। मुस्लिम शासकों के प्राप्त संरक्षण व संपर्क से शास्त्रीय संगीत को दरबार में गौरवपूर्ण स्थान तो मिला साथ ही मध्यकाल में प्रत्येक कला ने वर्चस्व प्राप्त किया जिसके कारण इस काल के संगीत को स्वर्णयुग माना जाता है।

मुसलमानों का आगमन भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटना है क्योंकि वे भारत में आकर भारतीय संस्कृति व समाज में घुलमिल गये तथा एकाकार हो गये, उनका अलग अस्तित्व न रहा। इस्लाम के सर्वव्यापी प्रभाव से संगीत भी अछूता न रहा। भारतीय संगीत की एक धारा शास्त्रीय आधार पर विकसित होती रही तो दूसरी धारा जनसामान्य के अधिक निकट रहकर पल्लवित व विकसित होती रही। यद्यपि दोनों धारायें एक दूसरे को प्रभावित करती रही तथापि दोनों अलग ही रहीं।

मुगल काल के आरंभ के समय ऐसा रहा कि हम अपना अस्तित्व सुदृढ़ नहीं रख पाएँ। हिन्दुस्तान के कुछ हिस्सों में 1526 ई. में बाबर की विजय हुई और यह वंश लगातार भारतीय सत्ता को हस्तगत करता चला गया। संगीत व संस्कृतिभीइसी प्रकार अपनी सफलता के बढ़ते हुए कदम के साथ लगातार प्रचलित होती चली गई।

बाबर के शासनकाल में संगीत (1526–30ई.)

बाबर को संगीत में अत्यन्त रूचि थी, वह संगीत का महान प्रेमी था, उसके दरबार में अनेक गायक–वादक थे। बाबर संगीत की महान् शक्ति को स्वीकार करता था। बाबर के काल में कल्लिनाथ प्रसिद्ध संगीतज्ञ हुए, जिन्होंने शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर की विस्तृत टीका लिखी।

मुगल बादशाहों और ग्वालियर के कलाकारों के पारस्परिक सम्बन्धों का सूत्रपात यहॉ से होता है।

हुमायूँ के शासनकाल में संगीत (1530–56 ई.)

बाबर का पुत्र हुमायूँ भी संगीत प्रेमी था, इसके दरबार में अनेक गायक–वादक हुए। हुमायूँ को संगीत का आध्यात्मिक रूप पसन्द था। अपने संकट के क्षणों में भी वह संगीत के द्वारा नवीन उत्साह प्रदान करता था। एक युद्ध के दौरान बैजूबावरा हुमायूँके आश्रय में पहुँच गए थे, बैजूबावरा के गायन से प्रभावित होकर हुमायूँ ने युद्ध रूकवा दिया, बाद में बैजूबावरा फिर बहादुरशाह जफर की सेवा में चले गए थे। परन्तु हुमायूँने इस आचरण पर अत्यन्त खेद प्रकट किया था।

अकबर के शासनकाल में संगीत (1556–1605ई.)

इसी प्रकार अपनी सफलता के बढ़ते हुए कदमों के साथ 1556 ई. में अकबर के शासनकाल का प्रथम चरण तक आ पहुँचा। यह काल भारतीय संगीत, साहित्य, कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। अकबर के समय में ही संगीतज्ञ स्वामी हरिदास हुए, जो अपनी एकाग्रता और प्रतिभा के फलस्वरूप संगीत में अलौकिक अभूतपूर्व शक्तियों का सम्पादन कर सके। इनके शिष्यों में तानसेन, बैजूबावरा उल्लेखनीय है। इनके शिष्यों में नवीन रागों और ध्रुपद, धमार, तिरवट, तराना, चतुरंग आदि भिन्न–भिन्न गीत प्रकारों की रचना की। अकबर ने नवरत्नों में तानसेन ने अपनी प्रखर आभा द्वारा संगीत के प्रेम व शाश्वतता का संबल लेकर संगीत जगत में क्रान्ति उपस्थित की।

इस काल में ख्याल गायकी व ध्रुवपद गायकी दोनों का प्रचार हुआ, तानसेन ने कई राग बनाए, जैसे– मियॉ मल्हार, दरबारी इत्यादि। इसी काल में संगीत तथा भक्ति काव्य के समन्वय की दृष्टि से भी यह काल महत्वपूर्ण रहा, जिसके द्वारा भारतीय संगीत की दार्शनिक पृष्ठभूमि का विकास व प्रचार संभव हुआ।

जहॉगीर के शासनकाल में संगीत (1605–26 ई.)

अकबर के बाद जहॉगीर का शासन था। वह भी संगीत प्रेमी था, उसने गजल लिखी तथा उसे हिन्दी गीतों को सुनने का शौक था, परन्तु इसके समय में श्रृंगारिक संगीत अधिक विकसित हुआ। इसी काल में पण्डित सोमनाथ ने ''राग–विबोध'' नामक ग्रन्थ लिखा, इस ग्रंथ में राग ध्यान भी दिए गए हैं। जहॉगीर सितारवादक भी थे। इनके समय में अकबर के काल की तरह ही हिन्दू–मुस्लिम संस्कृतियों का आदान–प्रदान होता था।

शाहजहॉ के काल में सगीत (1626–58 ई.)

जहॉगीर की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र शाहजहॉ के शासनकाल में सगीत की रीति परम्परा का प्रादुर्भाव हुआ। शाहजहॉ स्वयं भी एक मधुर एवं हृदयग्राही गायक थे तथा सितारवादन में प्रवीण थे। इस काल में ध्रुपद शैली का प्रचार था पर साथ ही फारसी एवं अरबी ध्वनियों के मिश्रण से भारतीय संगीत में कई नवीन गीत प्रकारों का विकास हुआ।

शाहजहॉ के दरबार में संगीतज्ञों में दिरंग खॉ, लाल खॉ इत्यादि हुए, जिन्हें उन्होंने 'गुण समुद्र' की उपाधियों से पुरस्कृत किया था। इस काल में कत्थक नृत्य का प्रादुर्भाव हो चुका था तथा उसका प्रचार कृष्ण नृत्य के परिवर्तित रूप में दरबारी ढंग से हो रहा था। इसी समय के चतुरंग की प्रथा चली इसमें आलाप, गीत, तराना तथा पखावज के बोल आदि रहते थे। इस समय के रचित ग्रन्थों में मुख्य रूप से इस काल में नृत्य–गायन गणिकाओं के संपर्क में अधिक होने के कारण पतन की ओर अग्रसर होने लगा था। कलाकारों का चरित्र भी संयमी न होकर विलासितापूर्ण हो गया था।

औरंगजेब काल में संगीत (1658–1700 ई.)

इसके बाद औरंगजेब राजा बना, इसका समय 1655–1700 ई. तक रहा, यह संगीत का महान् विरोधी था। अकबर, जहॉगीर व शाहजहॉ की भॉति औरंगजेब की प्रशंसा में भी अनेक ध्रुवपद मिलते थे। अपने प्रारंभिक काल में औरंगजेब को संगीत से चिढ़ नहीं थी। 1664 ई. में 'फखरूल्लाह' द्वारा रागदर्पण नामक ग्रन्थ लिखा गया, जिसमें औरंगजेब के संगीत प्रेम का वर्णन मिलता है। यद्यपि राज दरबारों से इस कला को प्रोत्साहन नहीं मिला फिर भी संगीत की चर्चा एवं प्रचार अवरूद्ध नहीं हुआ। औरंगजेब के शासनकाल यद्यपि बहुत अतिश्योक्तिमय रहा पर संगीतशास्त्र के क्षेत्र में कुछ महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना हुई, जिसमें पण्डित भावभट्ट के तीन ग्रन्थ अनूप विकास, अनुपांकुश एवं अनूप संगीत रत्नाकर है।

औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् अलग–अलग छोटी–छोटी रियासतें बन गई। इन रियासतों के राजाओं में से जिनको संगीत कला से प्रेम था, उन्होंने संगीत कलाकारों को आश्रय दिया और इन कलाकारों के कार्य अपने आश्रयदाताओं का गुणगान करना मात्र रह गया था और ये कलाकार खानदारी कलाकार कहलाए जाने लगे और इसी से घराना परम्परा की नींव पड़ी।

अतः निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि मुगलों के आक्रमण से भारतीय संगीत में भी कई सोपान बदले किन्तु भारतीय संस्कृति की नींव गहरी व मजबूत होने के कारण आगे निर्मित होने वाले सभी भवन इस पर आधारित है। मुस्लिम सभ्यता ने भारतीय संगीत को एक ऐसा मोड़ दिया कि वह मुस्लिम युग में भारतीय संगीत के बाह्य ढॉचे में परिवर्तन हुआ और विकास भी हुए, जिसके कारण नए राग–रागनियों तथा गायिकाओं को जन्म मिला।यदि मुसलमान बादशाह संगीत के प्रभाव को न समझते तो आज गन्धार ग्राम की तरह कहीं संगीत भी लुप्त हो चुका होता परन्तु भारतीय संगीत के प्रभाव और मुगलों के संगीत प्रेम के समन्वय का कुछ ऐसा प्रभाव हुआ कि आज अनेकों घराने, अनेकों सांगीतिक शैलियाँ हमारे सम्मुख हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. राधेश्याम, (1974),मुगल सम्राट बाबरप्रथम संस्करण, बिहारी हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,पटना।

2. रिजवी, सैयद अतहर अब्बास,(1526–15),मुगलकालीन भारत बाबरपहला संस्करण व दूसरा संस्करण, राजकमलप्रकाशन, नई दिल्ली।

3.आचार्य बृहस्पति,(1974),मुसलमान और भारतीय संगीत(प्रथम संस्करण),राजकमलप्रकाशन, नई दिल्ली।

4. उप्रेती, गिरिश चन्द, (1996), भारतीय संगीत बदलता परिदृश्य,राहुलपब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली।

5. संगीत मासिक पत्रिका, (जनवरी 2013), मुसलमान और भारतीय संगीत अंक।